INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 12 | JANUARY - 2022

भारत-अमेरिका सम्बन्ध (1991 से 2021) : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रमोद कुमार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, एल.एन.एम.एस. कॉलेज बीरपुर, सुपौल.

सारांश:

प्रस्तुत शोध आलेख भारत अमेरिका संबंध पर आधारित है। इस शोध आलेख में भारत एवं अमेरिका के बीच स्थापित राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक, रणनीतिक एवं अन्य विविध संबंधों का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन विशेष रूप से वर्ष 1991 से लेकर 2021 तक के परिप्रेक्ष्य में है। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर वर्ष 2021 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत व अमेरिका के बीच जो सम्बन्ध रहा है, वह उतार-चढ़ाव का रहा है। शुरुआति दिनों में भारत-अमेरिका का वैदेशिक संबंध पूर्व सोवियत संघ के साथ निकटता व भारत की सामाजवादी नीति के कारण कुछ बेहतर नहीं रहा है। परन्तु 1991 के पश्चात् भारत के द्वारा उदारीकरण की नीति अपनाने के कारण कुछ बेहतर हुआ। पुनः भारत के द्वारा 1998 में द्वितीय परमाणु परीक्षण के उपरांत दोनों के संबंध फिर खराब हो गये और अमेरिका के द्वारा भारत पर कई प्रतिबंध भी लगा दिये गये। इसी बीच एक ऐसी अप्रत्याशित घटना घटी, जिसने अमेरिका को झकझोर कर रख दिया । 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर अलकायदा के हमले के बाद अमेरिका को पहली बार आतंकवाद का खतरा अनुभव हुआ। अमेरिका को आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में भारत की महत्ता का अहसास हुआ। 21वीं सदी के प्रथम दशक के दौरान दोनों देशों के बीच न केवल द्विपक्षीय व्यापार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई, बल्कि सामरिक क्षेत्र में भी दोनों देशों के संबंधों में पारस्परिक सुधार हुआ है। उल्लेखनीय है कि सितम्बर, 2014 एवं 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अमेरिका यात्रा से यह सम्बन्ध और बेहतर हुआ है। दोनों देशों ने अगले दस वर्षों के दौरान वैश्विक स्थिरता और लोगों की आजीविका हित के लिए प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग सुदृढ़ और गहन बनाने हेतु "सामरिक भागीदारी के लिए विज्ञान वक्तव्य" बनाया और "चले साथ-*साथ ! हमें साथ-साथ आगे बढ़ना है । " का नारा दिया और इसी नारे के साथ दोनों देशों का वैदेशिक संबंध अग्रसर है।*

मूल शब्द : विदेश नीति, उदारीकरण, द्विपक्षीय संबंध, निवेश, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग ।

प्रस्तावनाः

भारत और अमेरिका विश्व के दो बड़े लोकतांत्रिक देश होने के बावजूद सामरिक और शक्ति के दृष्टिकोण से काफी लम्बे समय तक एक-दूसरे के विरोध में खड़े रहे। इसके पीछे की मुख्य वजह स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के द्वारा गुट निरपेक्ष नीति को अपनाना

रहा है। आधुनिक भारत और अमेरिका के बीच अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की शुरूआत अमेरिकी राष्ट्रपति हेनरी ट्रूमैन के समय 1949 में ही हो गई थी। परन्तु भारत की समाजवादी विचारधारा और अमेरिका के पूँजीवादी विचारधारा को लेकर दोनों का संबंध मात्र औपचारिकता थी ।

शीत युद्ध के कारण 1946 से लेकर 1989 तक सम्पूर्ण विश्व दो गुटों में विभक्त हो गया था। एक गुट का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा था, जिसकी विचारधारा पूँजीवादी था तो दूसरी गुट का नेतृत्व पूर्व सोवियत संघ कर रहा था, जिसकी विचारधारा साम्यवादी था। विश्व की प्रत्येक समस्या गुटीय स्वार्थ पर टिकी थी। समाजवादी विचारधारा का समर्थक होने के नाते भारत का झुकाव कहीं ना कहीं अप्रत्यक्ष रूप से ही सही पूर्व सोवियत संघ (USSR) की तरफ था। अमेरिका भारत का पूर्व सोवियत संघ के प्रति झुकाव से नाखुश था, क्योंकि भारत एशिया का एक महत्वपूर्ण एवं सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश था। हालांकि भारत ने किसी भी गुट में शामिल न होते हुए एक निर्गुट आन्दोलन की शुरुआत की, जिसे गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) कहा गया। दुनिया के कई देशों ने मिलकर विशेषकर, एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिकी देशों ने गुट निरपेक्ष आन्दोलन का निर्माण किया।

दूसरी तरफ 1954 में अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ मिलकर एक 'सेन्टो नामक संस्था की स्थापना की, जिससे भारत को नियंत्रित किया जा सके। इसी बीच 1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध के दौरान अमेरिका ने चीन के साथ मिलकर पाकिस्तान का पूरा सहयोग किया, जो कि भारत के लिए बेहद चिन्ता का विषय था। सोवियत संघ के सहयोग से भारत ने युद्ध जीत लिया और बंगलादेश नामक एक नया देश का उदय हुआ, जो पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा था। इस विजय से अमेरिका ने दक्षिण एशिया में भारत को एक बड़ी शक्ति माना और भारत के साथ सम्बन्ध मजबूत करने की कोशिश की ।

1974 ई० में भारत ने परमाणु परीक्षण कर पूरी दुनिया को चौंका दिया, क्योंकि भारत से पहले इस तरह का परमाणु परीक्षण संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थायी सदस्यों को छोड़कर किसी ने नहीं किया था। भारत परमाणु परीक्षण के बाद दुनिया के उन ताकतवर देशों की सूची में शामिल हो गया, जिसके पास परमाणु हथियार थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने इस परमाणु परीक्षण को शांतिपूर्ण परीक्षण का नाम दिया। इसके बाद अमेरिका ने भारत को परमाणु सामग्री और ईंधन आपूर्ति पर रोक लगा दिया। साथ ही भारत पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिये। इससे भारत और अमेरिका के सम्बन्ध में काफी कड़वाहट ला दी ।

दिसम्बर, 1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत एवं अमेरिका के संबंधों में सुधार आना शुरू हुआ। बीसवीं सदी के आखिरी दशक में जब भारत ने भी उदारीकरण की नीति अपनाई, तब इसके अमेरिका से न केवल आर्थिक सम्बन्ध कायम हुए, बल्कि इसके बाद दोनों देशों के राजनीतिक संबंध भी सुदृढ हुए। वर्ष, 1998 में भारत में द्वितीय पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद फिर से दोनों देशों के संबंधों में दरार पैदा हो गई। भारत के इस कदम से क्षुब्ध होकर अमेरिका ने पुनः भारत को प्रतिबंधित देशों की सूची में डाल दिया। इसी बीच एक ऐसी अप्रत्याशित घटना घटी, जिसने अमेरिका को झकझोर कर रख दिया। 21वीं सदी के प्रथम दशक के दौरान दोनों देशों के बीच न केवल द्विपक्षीय व्यापार में अप्रत्याशित वृद्धि हुई, बल्कि सामरिक क्षेत्र में भी दोनों देशों के संबंधों में पारस्परिक सुधार हुआ है।

भारत और अमेरिका के बीच वर्ष 2016 में लॉजिस्टिक एक्सचेन्ज मेमोरैंडम ऑफ एग्रीमेन्ट (LEMOA) पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते के तहत दोनों देशों के सेनाओं की एक-दूसरे के सहयोग का आदान-प्रदान हो सकेगा। इसी क्रम में वर्ष 2018 में भारत एवं अमेरिका के मध्य कॉमकासा (COMCASA) समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत एन्क्रिप्टेड, संचार प्रणाली के हस्तांतरण के सरल बनाने तथा उच्च तकनीक वाले सैन्य उपकरणों के आदान-प्रदान पर सहमति बनी है।

फरवरी, 2020 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा दो दिवसीय भारत यात्रा के बाद भारत-अमेरिकी सम्बन्धों को नई ऊर्जा मिली है। इसी दौरान दोनों देशों के बीच में भू-स्थानिक सहयोग के लिए बुनियादी विनिमय तथा सहयोग समझौते बेका(BECA) सम्पन्न हुआ। अमेरिकी राष्ट्रपति की इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच ऊर्जा, रक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण समझौता पर हस्ताक्षर किये गये। इसके साथ ही दोनों देशों ने आतंकवाद, हिन्द-प्रशांत क्षेत्र जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए इन क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर बल दिया।

दो बार भारत का यात्रा कर चुके वर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने भी कई अन्तर्राष्ट्रीय मंचों से भारत-अमेरिका संबंध पर अपना सकारात्मक रूख स्पष्ट किया है, परन्तु रूस- यूक्रेन युद्ध पर रूस का सुरक्षा परिषद में विरोध न करने पर नाराजगी व्यक्त की और पाकिस्तान की ओर अग्रसर हो रहा है, जो भारत के हित में सही नहीं है।

भारत एवं अमेरिका के मध्य ऊर्जा, व्यापार, रक्षा, अंतरिक्ष आदि क्षेत्रों में निरन्तर बढ़ते सहयोग के बावजूद पर्यावरणीय सुरक्षा, एन०पी०टी०, सी०टी०बी०टी०, यू०एन० ओ० में भारत की स्थायी सदस्यता जैसे अनेक मुद्दों पर सहमति नहीं बन पा रही है।

वर्तमान समय में विशेषकर वर्ष, 2014 से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में भारत-अमेरिका सम्बन्ध एक नयी दिशा की ओर अग्रसर हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए भारत का महत्व कई अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अहम हो जाता है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में जहाँ अमेरिका के विरोध में चीन और रूस लगातार खड़ा रहा है, वहीं भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक एवं सहिष्णुता पर आधारित देश का सहयोग आवश्यक हो जाता है। इसी कड़ी में क्वाड, I2U2 एवं 2+2 समूह का निर्माण किया जाना यह सिद्ध करता है कि एशिया महादेश में भारत के सहयोग के बिना चीन को नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। वर्तमान समय जिस प्रकार साम्यवादी चीन का विस्तारवादी रवैया बढ़ता जा रहा है, वह दक्षिण एशिया के लिए तो खतरा है ही साथ ही बहुत से एशिया, अफ्रीका के विकासशील देशों के हित में भी उचित नहीं है।

साहित्य समीक्षाः

भारत-अमेरिका के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालने के लिए अनेक पुस्तकें, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, शोध आलेख एवं शोध कार्य हुये हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण एवं नवीन अध्ययनों की समीक्षा की गई है, जो निम्नलिखित है:

भारत-अमेरिका सम्बन्धों पर विहंगम दृष्टिपथ करने वाली पुस्तक "इंडिया एण्ड द यूनाईटेड स्टेट्स इन ए चेन्जिंग वर्ल्ड" इसी श्रृंखला की एक कड़ी है, जो 'अशोक कुमार द्वारा लिखित एवं सेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा सन् 2002 में प्रकाशित हुई है। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की बदलती हुई परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में भारत- अमेरिका संबंधों में बदलाव के संकेत नजर आ रहे हैं, क्योंकि दक्षिण एशिया में चीन के निरंतर बढ़ते प्रभाव से अमेरिका की चिंता बढ़ गई है और भारत की भी ताकत लगातार बढ़ रही है, जिसके कारण अमेरिका एक ढाल के रूप में भारत से बदलती हुई संबंधों में अग्रसर है।

फ्रेडरिक एल० शूमा द्वारा रचित 'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति' नामक पुस्तक जिसका प्रकाशन" गया प्रसाद एण्ड सन्स पुस्तक पब्लिकेशन, आगरा से सन् 2004 में प्रकाशित हुयी है। इस पुस्तक में उन्होंने विश्व समस्याओं के लिए एक आधार प्रदान किया है। एक देश का दूसरे देश के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्या संबंध हो, इसका स्पष्टतया उल्लेख किया है तथा संबंधों के परिप्रेक्ष्य में तात्कालिक पृष्ठभूमि को भी समाहित किया गया है, जिससे कि भूतकाल से लेकर वर्तमान तक सभी देशों के आपसी संबंधों से भारत का पक्ष भी स्पष्ट हो जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रकाश डालती एक अन्य पुस्तक "भारतीय विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय संबंध " है, जो कि अर्चना उपाध्याय द्वारा रचित है। इस पुस्तक का प्रकाशन " संजय प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 2005" में हुआ। इस पुस्तक में भारतीय विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के क्रियान्वयन का समावेश किया गया है। भारतीय विदेश नीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्देश्य, सिद्धान्त बदलते हुए आयाम तथा विश्वव्यापी राजनीतिक परिवर्तन के पश्चात भारत-अमेरिका सम्बन्धों पर विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। परमाणु निःशस्त्रीकरण समस्या, सी०टी०बी०टी०, आतंकवाद की चुनौती जैसी गंभीर समस्याओं के प्रति भारत के दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत पुस्तक का आधार बनाया गया है।

इसी क्रम में एक अन्य पुस्तक "भारत की विदेश नीति और आतंकवाद है। इस पुस्तक का प्रकाशन ज्ञानदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली " से सन् 2006 में किया गया। यह पुस्तक भारत के विदेशी मामलों और उनमें हुई प्रगति पर लिखे लेखों का एक संकलन है और यह 1994 से 2001 तक के समय पर आधारित है। इसमें कश्मीर समस्या, भारत-पाक सम्बन्ध, तालिबान समस्या, आतंकवाद समस्या,

भारत के उभरते आयाम इन सभी बिन्दुओं की विस्तारपूर्वक विवेचना की है तथा इसी परिप्रेक्ष्य में भारत-अमेरिका सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है।

"यू० एस० फॉरेन पॉलिसी " कॉक्स माइकल एण्ड स्टोक्सडॉग द्वारा सम्पादित की गई है। इस पुस्तक का प्रकाशन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा सन् 2008 में किया गया। इस पुस्तक में अमेरिकी विदेश नीति के मूलभूत तत्वों के साथ इसमें हो रहे बदलाव की चर्चा की गई है। मूलतः यह पुस्तक अमेरिकी विदेश नीति के ऐतिहासिक पक्षों पर ही ध्यान दे पाती है।

इंडिया-यूएस रिलेशन्स अन्डर द ओबामा एडमिनिस्ट्रेशन नामक पुस्तक की रचना "थॉमस मैथ्यू " द्वारा की गयी एवं इसका प्रकाशन सन् 2010 में आईडीएस, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस पुस्तक में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के शासनकाल में हुए बदलाव को दर्शाने का प्रयास किया गया है तथा यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि ओबामा के राष्ट्रपति बनने के बाद अमेरिका के सम्बन्ध भारत के साथ किस तरह बेहतर हुए हैं।

"ज्वाइंट स्टेटमेन्ट्स ऑन द फिफ्थ इण्डो-यूएस स्ट्राटेजिक डायलॉग" नामक रिपोर्ट का प्रकाशन यू०एस० डिपार्टमेन्ट स्टेट द्वारा 31 जुलाई, 2014 को किया गया। इस रिपोर्ट में भारत-अमेरिका के मध्य जुलाई, 2014 में सम्पन्न पांचवी राजनीतिक साझेदारी वार्ता के बारे में विस्तृत उल्लेख किया गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि भारत एवं अमेरिका किन क्षेत्रों में सहयोग हेतु सहमत हुये हैं और एक-दूसरे को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं।

"भारत की विदेश नीति, पुनरावलोकन एवं संभावनाएँ ग्रंथ जिसका संपादन 2018 में सुमित गांगुली के द्वारा किया गया है। इसके अन्तर्गत भारत की विभिन्न देशों के साथ विदेश नीति के साथ-साथ भारत-अमेरिका के बीच विभिन्न समझौते जैसे परमाणु नीति, आर्थिक नीतियों, ऊर्जा से संबंधित नीति के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से भारत को एक उभरती हुई शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में बताने का प्रयास किया गया है।

इंडिया फॉरेन पॉलिसी : कम्टेम्परीट्रेन्डस", आर० एस० यादव की यह पुस्तक शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली द्वारा 2009 में प्रकाशित की गयी थी। इस पुस्तक में यह चर्चा की गयी है कि 21वीं सदी में भारतीय विदेश नीति में किस तरह परिवर्तन हो रहे हैं और इस बदलाव के पीछे कौन से कारक जिम्मेदार है, जिससे भारत महाशक्तियों से बेहतर सम्बन्ध बनाने की ओर अग्रसर है।

अध्ययन का उद्देश्यः

"भारत-अमेरिका सम्बन्ध (1991 से 2021) : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" का चयन करने के पीछे का मुख्य उद्देश्य भारत का अमेरिका के साथ सभी प्रकार के सम्बन्धों का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करना है। अतः अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

1. भारत-अमेरिका की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में बदलते सम्बन्धों का अध्ययन करना ।
2. भारत व अमेरिका की एक-दूसरे के प्रति निकटता व प्रतिद्वंदिता का अध्ययन करना।
3. निःशस्त्रीकरण, मानावाधिकार व लोकतंत्र की मनमानी परिभाषा करनेवाली अमेरिकी विदेश नीति का अध्ययन करना।
4. भारत व अमेरिका द्वारा आर्थिक, राजनैतिक व सामरिक क्षेत्र में एक-दूसरे प्रति सहयोग की नीति का विवेचन करना।
5. भारत-अमेरिका सम्बन्धों में तनाव की वजह या मुद्दों को प्रमुखता से अध्ययन करना।
6. अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के प्रति भारत व अमेरिका के दृष्टिकोण का विवेचन करना।
7. विशेषकर भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में भारत-अमेरिका सम्बन्ध का गहन अध्ययन करना।
8. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एवं जो बाइडन के कार्यकाल के दौरान भारत-अमेरिकी सम्बन्धों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना।
9. क्वाड, U2I2 व रूस-यूक्रेन युद्ध के परिप्रेक्ष्य में भारत-अमेरिका सम्बन्धों का अध्ययन करना।
10. अन्तर्राष्ट्रीय शांति व समझौते की नीतियों में भारत व अमेरिका की भूमिका अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाः

किसी भी शोध कार्य हेतु परिकल्पना का होना अनिवार्य है। यह अध्ययन को सही दिशा प्रदान करने में सहायक होती है। इस शोध कार्य में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ अपेक्षित है-

1. वर्ष, 2019 के बाद भारत-अमेरिका सम्बन्धों में अप्रत्याशित सुधार हुआ है।
2. भारत को विश्व गुरु बनने में अमेरिका के साथ मजबूत सम्बन्ध अनिवार्य है।
3. हिन्द पैसेफिक क्षेत्रों में शान्ति स्थापित करने में भारत-अमेरिका संबंध को मजबूत होना अति आवश्यक है।
4. चीन की विस्तारवादी नीति को नियंत्रित करने तथा सुरक्षा परिषद में भारत को स्थायी सदस्य बनाने में भारत-अमेरिका संबंध अतिआवश्यक है।

अध्ययन पद्धति :

शोध अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण अनेक प्रविधियों को अध्ययन में शामिल किया जाना अपेक्षित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक, अन्वेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है तथा इस शोध कार्य में तथ्य संग्रह हेतु द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों के अन्तर्गत विद्वानों के ग्रन्थों, पत्रिकाओं, जर्नल्स एवं समाचार पत्रों आदि का अध्ययन किया गया है। साथ ही इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री का अध्ययन एवं विश्लेषण कर शोध को विश्वसनीय एवं तार्किक बनाने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्षः

भारत की वैदेशिक नीति के परिप्रेक्ष्य में अमेरिका के साथ अध्ययन विशेषकर वर्ष 1991 से 2021 के समयान्तराल में अति महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं वर्तमान विदेश मंत्री एस. जयशंकर के कुशल नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति विश्व के अधिकांश देशों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। विश्व के सुपर पावर अमेरिका की भारत के बगैर विश्व शान्ति में अकेले नहीं चल सकता है। इसलिए अमेरिका कई प्लेटफॉर्म पर भारत के साथ द्विपक्षीय संबंध बनाने हेतु समझौते किये हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. हेरोल्ड आर० इसहाक, हमारे दिमाग पर खरोंच : चीन और भारत की अमेरिकी छवियों, रूटलेज प्रकाशन, न्यूकार्य, 2015
2. मैकमहन, राबर्ट जे०, द कोल्ड वार ऑन द पेरिफरी: द यूनाईटेड स्टेट्स, इंडिया एण्ड पाकिस्तान, कोलम्बिकया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961
3. यू० एस० इंडिया रिलेशनशीप इज ग्लोबल इन स्कोप : पेन्टागन, द इकोनॉमिक टाइम्स, 2022
4. हेरिश गार्डिनर, आउटरेज इन इंडिया एण्ड रिटेलिएशन, ओवर ए फिमेल डिप्लोमेंट्स, आवेर एव फिमेल डिप्लोमेंट्स अरेस्ट इन न्यूयार्क, द न्यूयार्क टाइम्स, 2013
5. हर्ष वी० पंत, भारत- अमेरिका संबंध : पठार से आगे बढना, नई दिल्ली, 2014 I
6. कैम्पबेल, जॉन सी० : द यूनाइटेड स्टेट्स इन वर्ल्ड अफेयर्स (1945-1947) हारपर फॉट द काउन्सिल ऑन फॉरेन रिलेशंस, न्यूयार्क, 1947
7. नरेश चन्द्रा रॉय, इंडिया एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका : ए स्टडी इन इंटरनेशनल रिलेशन्स : ए० मुखर्जी कॉपरेटिव लिमिटेड, कलकत्ता, 1954
8. हैरिसन, एस० एस० इण्डिया एण्ड यूनाइटेड स्टेट्स : मैकमिलन पब्लिशिं ग, न्यूयॉर्क, 1961
9. डब्ल्यू, नॉरमन ब्राउन, द यूनाइटेड स्टेट्स एण्ड पाकिस्तान, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1963

10. चन्द्रशेखर, एस०, अमिरिकन एण्ड एण्डियाज इकोनोमिक डेवलपमेंट : फ्रेडरिक ए० प्रैगर पब्लिशर्स, न्यूयार्क, 1965
11. चक्रवर्ती, बी० एन० इण्डिया स्वीक्स टु अमेरिका : ओरिएन्ट लौंगमेन्स प्रेस पब्लिशर्स, बॉम्बे, 1966 |
12. हैस गैरी आर०, अमेरिकन एनकाउन्टर्स इण्डिया (1941-47) : जॉन हापकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस, बाल्टीमोर, 1971
13. हैरिसन, एस० एस०, इण्डिया एण्ड अमेरिका आफ्टर द कोल्ड वार : कारनीज एडोबमेंट फॉर इन्टरनेशनल पीस पब्लिशर्स, वाशिंगटन, 1731
14. जैन, बी० एम०, साउथ एशिया : इण्डिया एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स, आर०बी०एस०ए० पब्लिशर्स, जयपुर, 1989
15. दिनेश कुमार, डिफेंस इन इंडो-यू०एस० रिलेशन्स : इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एण्ड एनालिसिस, न्यू देल्ही, 1997
16. सनमुगुम एम० इण्डिया पार्लियामेन्ट एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स : अन्नामलाई यूनिवर्सिटी प्रेस पब्लिकेशन, 1998
17. वी० के० मल्होत्रा, ए न्यू एरा इंडो-यू० एस० रिलेशंस : विस्डम हाउस एकेडमिक बुक पब्लिशर्स, पंचकुला, 2002
18. इंडिया यू०एस० एण्ड ए ईयर ऑफ टुगेदरनेश, द इण्डियन एक्सप्रेस, 16.02.2022
19. बासु, नायानिमा, इंडिया - यू० एस० टाइस स्टील प्रोब्लमैटिक, बिजनेश स्टैण्डर्स इंडिया, 2015
20. नरेन्द्र मोदी : यू०एस० टर्न्स ऑन चार्म एस रोडशो रॉल्स इन्टू न्यूयॉर्क, द गार्जियन, 2014